जनजातीय समाज के उत्थान में सहायक साबित हुआ शिबू सोरेन का रात्रिपाठशाला

सरिता कुमारी

शिबू सोरेने राजेंद्र तिवारी को ही आदिवासियों को शिक्षित करने का जिम्मा दे रखा था। प्रारंभिक दिनों में तिवारी जी आदिवासियों के घर–घर पहुंच बच्चे और बड़ों को आश्रम तक लाते थे। जहां रात को पढ़ाई करवाते थे। बाद में इसका इतना असर हुआ लोग खुद ही आश्रम आकर पढ़ाई करने लगे। धीरे–धीरे टुंडी के कई गांवों में रात्रिपाठशाला का संचालन होने लगा। शिबू सोरेन खुद इन लोगों को पढ़ाई कराते थे। साथ ही उन्होंने शिक्षित लोगों से आग्रह शुरू किया के वो कम से कम पांच लोगों को शिक्षित बनाएं। यह अभियान तेजी से आगे बढ़ने लगा। जिसके बाद लोग शिबू सोरेन को गुरुजी कहने लगे। आज भी शिबू सोरेन को लोग प्यार से गुरुजी और दिशोम गुरु (विश्व गुरु) जैसे नाम से लोग पुकारते हैं।

शिबू सोरेन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए इन प्रयासों से आदिवासी समाज को उत्थान हुआ। वे अपने अधिकारों को भली भांति समझने लगे लेकिन अगर हम वर्तमान समय की बात करें तो आ भी जनजातिय समाज के लोग शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए हैं। वर्ष 2011 के जनगणना के मुताबिक झारखंड राज्य में साक्षरता दर 66.44 फीसद है। इनमें अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता दर 57.1 फीसद है, जो राज्य के साक्षरता दर से 9.31 फीसद से कम है।